वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कृत वाङ्मय की प्रासंगिकता

सम्पादक
डॉ. प्रभात कुमार सिंह

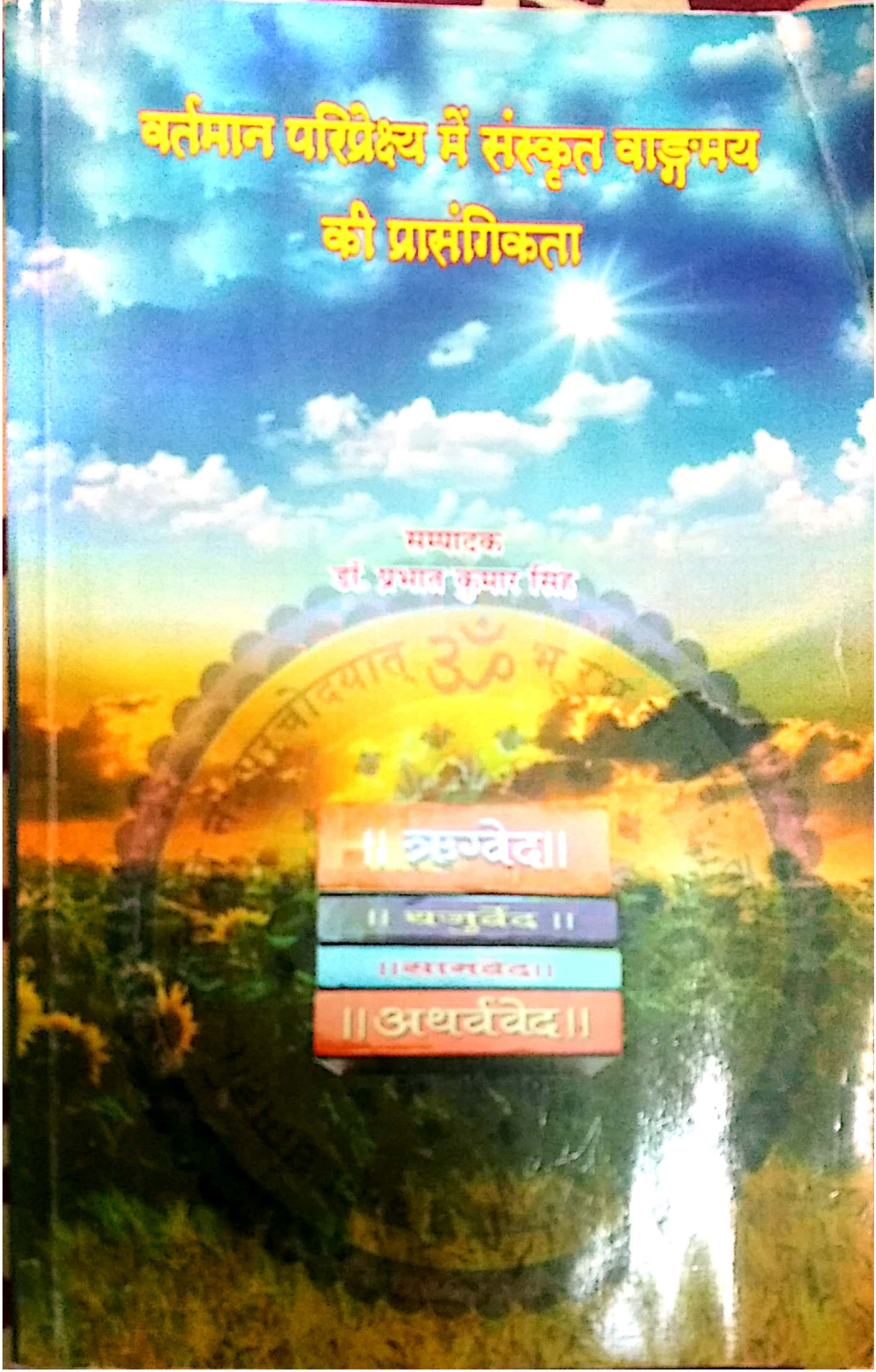

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

१. संस्कृत का प्रभाव एवं उसकी प्रासङ्गिकता
डॉ० राम सुमेर यादव ११-१८

२. मानवाधिकार संरक्षण में संस्कृत वाङ्मय की प्रासंगिकता
डॉ० अनीता १९-२६

३. पंचतन्त्र के राजधर्म की प्रासंगिकता
डॉ.संजय कुमार २७-३६

४. सामाजिक सन्दर्भ में संस्कृत वाङ्मय की प्रासंगिकता
डॉ० कमलेश रानी ३७-४५

५. संस्कृत वाङमय स्थित संवाद-परंपरा एंव वैचारिक बहुलता की प्रासंगिकता
डॉ० प्रीति कमल ४६-५२

६. संस्कृत रंगमंच
डॉ० प्रिया कौशिक ५३-६१

७. आर्थिक विचारों के उद्भव एवं विकास में संस्कृत वाङ्मय की प्रासंगिकता
डॉ० शशिबाला ६२-६६

८. राजनैतिक सन्दर्भ में संस्कृत वाङ्मय की प्रासंगिकता
डॉ. राजमंगल यादव ६७-७६

९. आधुनिक काले संस्कृतस्य प्रासङ्किता
डॉ० ब्रह्मानन्द शुक्लः ७७-७९

१०. संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक काव्यों की प्रासंगिकता
डॉ० अनीता कुमारी ८०-८५

११. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत वाङ्.मय की प्रासंगिकता
सुनील कुमार विश्वकर्मा ८६-९४

१२. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में गीता-ग्रथित विचारों की उपादेयता
डॉ० अमिता सिंह ९५-१०३

१३. आधुनिक संस्कृत कथा-संग्रह 'दुधुक्षा' की वर्तमान में प्रासंगिकता
हेमलता रानी १०४-११२

१४. सामाजिक समरसता के संवर्धन में वैदिक मूल्यों का अवदान
डॉ० उष्मा यादव ११३-११९

१५. वैदिक वाङ्मय की वर्तमानकालिक प्रासंगिकता
डॉ० अवनीन्द्र कुमार पाण्डेय १२०-१२४

Scanned with CamScanner

पंचतन्त्र के राजधर्म की प्रासंगिकता

डॉ.संजय कुमार
सहायक-आचार्य, संस्कृत विभाग,
डॉ.हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

संस्कृत साहित्य विश्वसाहित्य परम्परा की अमूल्य निधि है। यह साहित्यिक मीमांसा के साथ-साथ सांस्कृतिक तत्त्वों के स्वरूप परंपरा का भी उन्नामक साहित्य है। इसमें सांस्कृतिक मूल्यों को केवल संरक्षित ही नहीं किया गया है अपितु उनको शाश्वत धर्म के रूप में स्थापित किया गया है। संस्कृत साहित्य में शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति, धर्म-दर्शन, उत्सव-महोत्सव, उपदेश एवं राजधर्म आदि विषयों का समावेश प्राचीन समय से ही मिलता रहा है। जिसमें पंचतन्त्र का स्थान महत्त्वपूर्ण है। पंचतन्त्र-मित्रभेद, मित्रलाभ, सन्धिविग्रह, लब्धप्रणाश तथा अपरीक्षितकारक इन पांच तन्त्रों से सम्मिलित ग्रन्थ का नाम है। प्रत्येक तन्त्र में मुख्य कथा एक ही है जिसके अंग को पुष्ट करने के लिए विविध गौण कथाएँ कही गयी हैं। लेखक का उद्देश्य आरम्भ से ही सदाचार, नीति और राजधर्म के विविध पक्षों का उद्घाटन करना रहा है। विशेषकर राजधर्म ही पंचतन्त्र का मूल प्रतिपाद्य विषय है क्योंकि महिलोरोप्य के राजा अमरकीर्ति के पुत्रों को सुशिक्षित करने के लिए पंचतन्त्र की रचना विष्णुशर्मा ने किया था। विष्णुशर्मा के उपदेश शैली का ऐसा प्रभाव राजकुमारों पर पड़ा कि वे बहुत अल्प समय में ही व्यवहार कुशल, सदाचारी और राजधर्म के ज्ञाता बन गये।[१]

पंचतन्त्र ऐसा ग्रन्थ है जिसमें पशु-पक्षियों के आधार पर राजकुमारों को उपदेशित किया गया है। पशु-पक्षी सामान्य जनमानस केन्द्रस्थल हैं। इसलिए पंचतन्त्र लोक का प्रतिनिधित्व करता है और लोक सदैव प्रासंगिक ही होता है। वैसे तो सभी साहित्य समाज के दर्पण हैं लेकिन उनमें भी पंचतन्त्र समाज के अधिक समीप है। पंचतन्त्र की कथाए भारतीय परम्परा की समृद्ध धरोहर हैं। यह युगों-युगों से मानव समाज को प्रकाशित कर रहा है। उचित-अनुचित का विवेक उत्पन्न कर पीढ़ी दर पीढ़ी ने आने वाली संतानों के लिए दुर्लभ ज्ञान पेटिका को सौंपने वाला ग्रन्थ पंचतन्त्र है।

अनादिकाल से ही राष्ट्र के हितैषी-मनीषियों द्वारा राजधर्म का उपदेश दिया जाता रहा है। इसी रूप में पंचतन्त्र भी प्रसिद्ध है। राजव्यवस्था का उचित नियम राजधर्म कहलाता है। राजधर्म को सभी धर्मों का मूल कहा गया है। इसीलिए राजधर्म के लिए दण्डनीति, क्षत्र विद्या, नृपशास्त्र, राजशास्त्र, राजनीति आदि नामों का प्रयोग किया जाता है। इसकी प्रासंगिकता एवं उपादेयता का ज्ञान इसी से हो जाता है कि इसके विषय वेद, उपनिषद्,

Scanned with CamScanner